श्रद्धांजलि

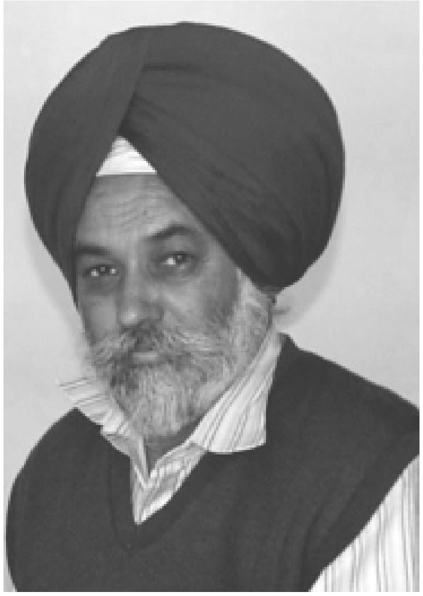

राष्ट्रीय सिख संगत पंजाब प्रांत के अध्यक्ष स. रूल्दासिंह जी नहीं रहे । गत दिनांक 28 जुलाई 2009 की रात्रि को उनके निवास पर कातिलाना हमला हुआ । उनकों बचाने के सभी प्रयास पी.जी.आई., चण्डीगढ़ के कुशल डॉक्टरों ने किये, लेकिन अंत्तोगत्वां वह क्रूर मृत्यु उन्हें हमसे छीनकर ले गई और रह गई पीछे उनकी ढेर सारी स्मृतियां और उनके द्वारा छोड़े अधूरे कार्य। अपने सात भाईयों मे सबसे बड़े स. रूल्दासिंह अपने पिता स. बाबूसिंह के सपनो के अनुसार परिवार को समृद्ध बनाना चाहते थे और उन्होंने ऐसा किया भी । पटियाला जिले के जस्सोवाल गांव की किसानी से उठकर उन्होंने पटियाला में ट्रांसपोर्ट का व्यापार किया, एक्सपेलर लगाया तथा अनाज मण्डी में आड़त की दुकान खोलकर एक व्यावसायी के रूप में प्रतिष्ठा व स्वीकारिता प्राप्त की, पर प्रारंभ से ही इनका मन इस समाज के लिए कुछ देने के लिए था । इस कारण उन्होंने शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा के नाते सिख परंम्परा में उच्च सम्मान रखने वाली दमदमी टकसाल के महता चौक में धार्मिक शिक्षा प्राप्त की । संत जरनैल सिंह भिण्डरावाले जी के साथ-साथ अनेक महत्वपूर्ण गुरसिख संतों के साथ उनकी गहरी निकटता थी। नीला तारा घटना से आहत हुए सिख मन पर मरहम लगाने हेतु किए जाने वाले प्रयासों में उन्होंने भारत से बाहर चले गये सिख युवकों तथा भारतीय मूल के विदेशों में निवास कर रहे सिखों को राहत पहुंचाने का बीड़ा उन्होंने अपने सिर लिया और इस कारण भा.ज.पा., पंजाब के एन.आर.आई. सेल के महामंत्री थे। सत्तर व अस्सी के दशक में हुए घटनाक्रम के क्रम में मीडिया द्वारा सिखों की छवि को विकृत करने के स्वरूप समस्त सिख समाज को सन् 1984 के कत्लेआम के रूप में सजा भुगतनी पड़ी, जिससे सिख मन आहत तो हुआ ही साथ ही सिख की एक विशेष पहचान होने के कारण उसे भारत में ही उपेक्षा व सामाजिक दुर्व्यवहार का शिकार बनना पड़ा, जबकि सिखों की छवि समाज व कमजोर लोगों के रक्षक व अन्याय से जुझने वाले व्यक्ति की रही थी । इस हेतु इस पीड़ा को समझने के लिए अनेक लोगों और संस्थाओं ने प्रयास किये जिसमें राष्ट्रीय सिख संगत का गठन भी उसी कडी का नतीजा था । स. रूल्दासिंह द्वारा पंजाब प्रदेश के महामंत्री के रूप में यह जिम्मेदारी संभाल-कर गुरूवाणी के आधार पर सामाजिक समरसता के लिए अनेक प्रयास व कार्यक्रम किये । उन्होंने पंजाब के संत समाज, दमदमी टकसाल तथा संघ के अधिकारियों की आपस में महत्वपूर्ण बैठके कराकर, विदेशों में निवास कर रहे सिखों, जिन्हें भारत सरकार की काली सूची में रख देने के कारण उनका भारत आना संभव नहीं था, उनके नाम काली सूची से हटवाने (विदेशों में पासपोर्ट व अन्य दस्तावेजों की कमी के कारण भटक रहे सिख नवयुवकों को पुन: भारत में लाने (पंजाब का सेना में अनुपात बढवाने तथा अन्य संवेदनशील मुद्दों के नौ सूत्रीय कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कराने व उसे भारत सरकार तथा विशेषकर श्री लालकृष्ण आडवाणी जी को उन विषयों पर सहमत करने व तद्नुसार राहत पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । स. देवेन्द्र सिंह भुल्लर की फांसी के विषय को श्रीमती भुल्लर द्वारा स. रूल्दासिंह से सम्पर्क करने पर, उनके द्वारा राष्ट्रीय सिख संगत के माध्यम से प्रयास कराकर स. भुल्लर की फांसी स्थगित कराने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया । उनके द्वारा पंजाब के प्रमुख संतों को साथ लेकर पाकिस्तान से प्रारंभ कर नांदेड़ साहिब की शांति यात्रा भी निकाली गई तथा गत 300सालां गुरूता गद्दी वर्ष के अवसर पर पंजाब के प्रमुख संतों व दमदमी टकसाल को जागृति यात्रा में पूरा सहयोग संगठन का दिलवाया । इसके अतिरिक्त आयेदिन विदेशों में निवास

कर रहे सिखों के विषयों को उचित जगहों पर उठाते थे तथा पंजाब में सौहार्द व समरसता का वातावरण बनाने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहते थे, जिसके कारण अनेक विरोधी लोग भी समरसता व भारत की एकता-अखण्डता के लिए साथ आये । गत दिनों जब सिंगापुर की एक एन.आर.आई. महिला की भारत में जालंधर निकट स्थित कृषि भूमि व मोहाली में भूखण्ड़ को किन्ही तथाकथित संत द्वारा हड़प लिया गया और उसके विरोध करने पर झूठा मुकदमा लगवाकर बंद कर दिया, तो स. रूल्दासिंह जी के प्रयासों से उस महिला को राहत मिली व दोषी व्यक्तियों के खिलाफ मुकदमें दर्ज होने की आशा बंधी तभी यह दुखद घटना हो गई । इसलिए उनकी हत्या को इसी संदर्भ में देखा जा रहा है । वह महिला उस रात उनके निवास पर आयी तथा खाना इत्यादि लेने के बाद ही यह दुखद घटना हुई । उनके शरीर पर लगी गोलिया यही इंगित करतीं हैं कि किसी पेशेवर हत्यारे द्वारा ऐसे कार्य किया गया है । स. रूल्दासिंह पटियाला से बकायदा एक कार्यालय एन.आर.आई. लोगों की मदद के लिए चला रहे थे । वह अनेकानेक संस्थाओं में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे थे। उनके अचानक चले जाने से उनके द्वारा चलाये जा रहे सत्प्रयासों को गहरा आघात पहुंचा है, वहीं राष्ट्रीय सिख संगत के सभी कार्यकर्त्ताओं को उनके बिछड़ने की गहरी वेदना है ।

मृत्यु एक शाश्वत सत्य है और जीवन एक शाश्वत प्रवाह ! समय के पटल पर हर कोई अपने हिस्से का रोल निभाकर अलोप हो जाता है, पर किसी-किसी का उस परदे से अचानक अलोप कर दिया जाना कहानी को अधूरापन देता है या उस कहानी को एक नया मोड़। पटल पर भूमिका निभा रहे पात्र की भी अधूरी कहानी के किसी छोर को पकडकर एक नई रचना भी कर सकते हैं ।

मृत्यु के संबंध में यदि महाभारत के ''यक्ष प्रसंग'' को लें, तो संसार के जीव पल-प्रतिपल मृत्यु की गोद में जा रहें है लेकिन कुछ समझते हैं कि यह हमारे लिए नहीं है । यह बात उन लोगों के लिए भी लागू होती है, जो दूसरों का जीवन छीनने में एक पल नहीं लगाते । इस संसार में रहते हुए व्यक्ति अपने परिवार, परिवेश, समाज, राष्ट्र तथा मानवता के प्रति अपनी संवेदनाएं, भावनाएं रखते हुए कुछ न कुछ योगदान सभी के लिए देता है लेकिन कुछ लोग समाज, राष्ट्र या मानवता के लिए अपने परिवार की अनदेखी करते हुए दीपक की बाती की तरह हर पल स्वयं को भी जलाते हैं । हर किया जाने वाला अच्छा कार्य किसी न किसी ''बुरे'' को अवश्य ही खटकता है और वह अच्छाई को समाप्त करने के लिए क्रूर से क्रूरतम तरीके बनाता है लेकिन अच्छाई समाप्त नहीं होती, बल्कि कई गुना बढ़कर सामने आती है। गत दिनों उत्तर-पूर्व में जाने का अवसर मिला और यह जाना, कि बांस का वृक्ष एक सीमा तक बढ़ने के बाद जब पुष्प-पल्लिवत होता है, तो वह एकदम मिट्टी के ढेर में बदल जाता है। लोग समझतें हैं कि बहुत ऊंचा दिखने वाला यह मिट्टी में मिल गया है लेकिन कुछ समय बाद उसी बांस के पुष्प मिट्टी में से अनेकों बांसों को जन्म देने के लिए अंकुरित हो जातें है । यही कारण है, कि सच्चाई कष्ट उत्पीड़न व क्रूरता सहने का एक लम्बा सफर तय करती है लेकिन जीत अंत्तोगत्वा सच्चाई की ही होती है ।

यह अजीब बिड़म्वना है कि सच्चाई को भी पहले गलत समझा जाता है लेकिन जैसे-जैसे यह कष्ट व उत्पीड़न सहते-सहते शांतचित्त व सर्मपण से आगे बढ़ती है, लोग उसे समझने लगते हैं । आग में तपना तो सोने को पड़ता है तथा वह तपकर और अधिक चमकीला निकलता है । हम सभी यदि श्री गुरूग्रंन्थ साहिब जी का आसरा लेकर सांझीवालता, सामाजिक समरसता व भारत की प्राचीन विरासत व संस्कृति को सारे विश्व तक पहुंचाना चाहते हैं तथा गुरूवाणी का आधार लेकर सारे भारतवर्ष को श्री गुरूग्रन्थ साहिब जी से जोड़ते हुए, सारे विश्व को अपनी बाहों में लेना चाहते है तो निश्चय ही सफर लम्बा व कष्टप्रद होगा ही । लेकिन अंत्तोगत्वा यह समाज हमारे समर्पण को देखकर, हमारे सत्प्रयासो को स्वीकारता देगा ही । अकाल पुरख हमें सत्य की राह पर अड़ोल चलने की सामर्थ्य दे तथा भटकों को सद्बुद्धि दें, यही अरदास है ।

(स. गुरचरन सिंह गिल)

राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय सिख संगत